



जागृति

बाल साहित्य विशेषांक



पी.एन. सिंह

पी.ई.एस.



जिला विद्यालय निरीक्षक,

प्रयागराज।

अ.शा.प./10869/2024-25

दिनांक : 27 नवम्बर, 2024

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हो रही है कि कुम्भ नगरी प्रयागराज के हृदय स्थली में स्थित विद्यालय कर्नलगंज इण्टर कॉलेज, प्रयागराज अपनी वार्षिक पत्रिका 'जागृति' का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि विद्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के माध्यम से विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा। यह विद्यालय अपने स्थापना काल से अद्यतन बच्चों की शिक्षा के प्रति सचेष्ट है। इस विद्यालय से पढ़कर निकलने वाले छात्रों ने देश-विदेश में विद्यालय का नाम स्थापित किया है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सामग्री विद्यार्थियों, अभिभावकों सहित सुधीजनों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(पी.एन. सिंह)

श्री अजय कुमार
प्रधानाचार्य
कर्नलगंज इण्टर कालेज
प्रयागराज।

अनुक्रमणिका

● शुभकामना संदेश	- डॉ. प्रवाल नियोगी	3
● शुभकामना संदेश	- पी.एन. सिंह	4
● सम्पादकीय	- अजय कुमार	5
● परिचय (डॉ. विजय शंकर त्रिपाठी)		6
लेख		
● बाल-मन और बाल-साहित्य	- प्रोफेसर राजेंद्र कुमार	7
● बाल साहित्य : नया चिंतन, नया प्रतिमान	- प्रोफेसर दिविक रमेश	9
● प्राचीन भारतीय बाल-साहित्य और आधुनिक परिप्रेक्ष्य	- प्रोफेसर ज़ाहिद अबरोल	16
● ओड़िआ बाल साहित्य	- प्रोफेसर अजय पटनाइक	20
● तमिल बाल साहित्य	- डॉ. चिट्टि अन्नपूर्णा	25
● तमिल के आधुनिक बाल-साहित्य	- डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	29
● बांग्ला बाल साहित्य	- डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी	36
● उर्दू साहित्य की बाल कविताओं पर एक नजर	- डॉ. अजय मालवीय	39
● बालसाहित्य और डिजिटल मीडिया : एक समकालीन दृष्टिकोण	- ऋतु राय	46
● बाल साहित्य में प्रयागराज	- जगत बहादुर सिंह	48
● अंग्रेजी बाल साहित्य में इलाहाबाद का योगदान	- डॉ. राघवेंद्र प्रताप सिंह चंदेल	50
● संस्कृत में बाल साहित्य : भूमिका व प्रणयन	- सुशांत सिंह	52
● इण्डियन प्रेस और बाल-साहित्य	- डॉ. नर नारायण 'शास्त्री'	54
● बाल साहित्य के चितरे साहित्यकार : सुकुमार राय	- लेफ्टिनेंट शक्ति सिंह यादव	56
कहानियाँ		
● गोरी बिल्ली काली बिल्ली	- अजामिल जी	58
● जूतों की बारात व क्रान्तिकारी जगदीश बहल	- डॉ. रूपसिंह चन्देल	61-62
● बन्दर दादा की नासमझी	- बलराम अग्रवाल	64
● बंटी का कम्प्यूटर	- अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'	66
● सुंदर सब कर लेगा	- डॉ. मोहम्मद अरशद खान	69
कविताएँ		
● कविताएँ	- यश मालवीय	72
● कविताएँ	- संध्या नवोदिता	75
● गज़लें	- सुशांत चट्टोपाध्याय 'सफ़ीर'	77
अनुवाद		
● काबुलीवाला (कहानी)	- रवींद्रनाथ टैगोर	78
● डिक डिटिंगन और उसकी बिल्ली (कहानी)	- पी.एच. म्योर - अनुवाद : डॉ. रूपसिंह चन्देल	81
निबन्ध		
● छात्र जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका	- सर्वेश यादव (छात्र)	87
विद्यालय		
● विद्यालय की पाठ्य सहगामी क्रियाएँ		90
● छात्रवृत्तियाँ एवं पुरस्कार		91
● वर्तमान प्रबन्ध समिति एवं सदस्य		94
● अध्यापकों की सूची		95
● शिक्षणोत्तर कर्मचारियों की सूची		96

तमिल के आधुनिक बालसाहित्य

—डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

साहित्य समाज का दर्पण है। बालक भावी युवा पीढ़ी है, किसी भी समाज एवं देश का वह भविष्य है। बालक कच्ची मिट्टी के समान हैं, जिन्हें हम मनचाहे रूप में ढाल सकते हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य में परिवारवाले, समाज और साहित्यकारों की अहम् भूमिका है। परिवार, समाज, तथा देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुसंस्कृत बाल एवं युवापीढ़ी के निर्माण में साहित्य का योगदान अतुलनीय है। बालसाहित्य हमारी संस्कृति, स्वधर्म, परंपरा, मान्यता, समाज, रीति-रिवाज, नैतिक एवं जीवनमूल्य, आदि का परिचायक है। समृद्ध बालसाहित्य, बच्चों में आत्मविश्वास, सहिष्णुता, दया, करुणा, ममता, कर्तव्यपरायणता, सत्यनिष्ठ, दृढ़संकल्प, संयम, शांति, राष्ट्रभक्ति, परिश्रम, परोपकार, बड़ों के प्रति आदर और सम्मान, आदि मूल्यों को प्रदान करनेवाला मनोहर व अनमोल खजाना है। सतत समृद्ध तमिल साहित्य में आधुनिक बाल साहित्य के अमूल्य योगदान पर प्रकाश डालने का लघु प्रयास इस लेख में किया गया है।

ऐसी मान्यता है कि तमिल बालसाहित्य का उद्भव, संगम साहित्य से ही प्रारंभ हुआ है। तोलकाप्पियम, अगनानूरु, सिलप्पदिकारम, मणिमेखलै, भक्तिसाहित्य, आवैय्यार साहित्य, आदि विभिन्न कालक्रमों के साहित्य में बालकविताएँ एवं बालोपयोगी कहानियाँ, पहेलियाँ, सूक्तियाँ, दोहे, आदि उपलब्ध हैं। हालांकि स्वतंत्र विधा के रूप में इसका विकास आधुनिक युग में ही प्रारंभ हुआ है। आधुनिक युग के अर्थात् स्वतंत्रता के पूर्व युग के कविमणि देसिक विनायगम पिल्लै राष्ट्रकवि सुब्रमण्य भारती, भारतिदासन और स्वातंत्र्योत्तर युग के म.प. पेरियसामीतूरन, अल वल्लियप्पा वर्तमान युग के पूवण्णन्, सुकुमारन्, म. कमलवेलन्, एम.एल. तंगप्पन्, कोदंडम, रेवती, आयिशा इरा. नटराजन, सेल्लगणपति, कुल. कदिरेसन, मु. मुरुगेश, की. सेतुपति, बालभारती, उदयशंकर, आदि अग्रणी बालसाहित्यकारों द्वारा पल्लवित और पुष्पित है। वर्तमान युग के तमिल बालसाहित्य के लिए इन साहित्यकारों की देन पर संक्षिप्त जानकारी देने का अल्प प्रयास इस लेख में किया गया है। बाल साहित्य किसे कहते हैं? बच्चों के मानसिक स्तर के अनुरूप लिखा गया साहित्य बाल साहित्य कहा जाता है। इसके माध्यम से बच्चों का मनोरंजन, शिक्षा, संस्कार, सद्गुण, प्रेरणा, मानवीय मूल्य और दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। बाल साहित्य, साहित्य का अभिन्न अंग है। बाल साहित्य में कहानी, कविता, उपन्यास, पहेलियाँ, नाटक, आदि कई विधाएँ शामिल हैं। गद्य कोश के अनुसार बाल साहित्य का मूल आशय बालक के लिए सृजनात्मक साहित्य से है।

बाल साहित्य की आवश्यकता : हितोपदेश के अनुसार “यन्नवे भाजने लग्नः, संस्कारो नान्यथा भवेत्। कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते॥” अर्थात्—“जैसे मिट्टी के कच्चे पात्र में बने चित्र, रेखाएँ आदि कलात्मक संस्कार उसके पकाए जाने पर नहीं मिटते, वैसे ही कोमल बुद्धिवाले बालकों के मन से अनेक कथाओं के बहाने सुनाए गए नीति वचन नहीं मिटते।” अतः यह स्पष्ट है कि मानव चरित्र का निर्माण बचपन में ही विकसित होता है। आज के बच्चे ही कल का भविष्य हैं। इनके कंधों पर ही किसी भी समाज, भाषा, संस्कृति एवं देश का भविष्य निर्भर है। अस्तु बच्चों को सुसंस्कृत नागरिक बनाना हमारा चरम कर्तव्य है। इस महत्वपूर्ण कार्य में बाल साहित्य का योगदान अतुलनीय है। बच्चों का मन एवं चिंतन नवनीत की तरह अत्यंत कोमल, नाजुक एवं तरल है। इसे मनोनुकूल आकार देकर सक्षम तथा सशक्त बनाने के लिए बाल साहित्य की सहायता अनिवार्य है। बच्चों में सकारात्मक गुण विकसित करना, उनकी जिज्ञासा तृप्त करना, परिवार के साथ-साथ बालसाहित्य का गंभीर लक्ष्य बनता है। भाषा की समृद्धि एवं लिखित रूप (लिपि) को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित व कायम रखने के लिए बाल साहित्य अत्यधिक आवश्यक है।

बाल साहित्य का उद्देश्य

- बच्चों का मनोरंजन।
- उन्हें धैर्य, साहस, मानवता, सकारात्मक सोच, सत्यनिष्ठ, परिश्रम, परोपकार, ईमानदार, सद्भावना, राष्ट्रप्रेम, आदि प्रदान करना।
- उन्हें शिक्षित एवं संस्कारवान बनाना।
- दुनिया की वास्तविकता की जानकारी प्राप्त करने की प्रबल इच्छा को बढ़ाना।
- बच्चों में पठन-लेखन संस्कृति एवं क्षमता विकसित करना।
- भाषिक व संज्ञात्मक कौशल को समृद्ध करना।
- मौखिक कहानी, चित्रात्मक कहानी, जंगल जानवरों की कहानी, परी कहानी, आदि द्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढ़ाना।
- सही-गलत को परखने की क्षमता प्रदान करना।

बाल साहित्य का प्रयोजन

- बच्चों में नई ऊर्जा और प्रेरणा प्राप्त होती है।
- अच्छा संस्कार, उत्तम गुण, मानवीय व जीवन मूल्य, आदि बच्चों के मन में अनायास बोया जाता है।
- कुछ कर दिखाने का जुनून उत्पन्न होता है।
- बदलते परिप्रेक्ष्य में, नानी, दादी, बुआ द्वारा प्राप्त होने वाले अच्छे संस्कारों की आपूर्ति बाल साहित्य से हो रही है।
- उन्नति के नाम पर हो रहे विज्ञान, समाज, राजनीति, आदि के कुप्रभाव से बचने का सद्मार्ग प्राप्त होता है।

बाल साहित्य का स्वरूप

- उम्र को ध्यान में रखकर भाषा शैली सरल, सरस, सहज, रोचक एवं मार्मिक होनी चाहिए।
- बाल सुलभ आकर्षक विषय होना चाहिए। यथा कल्पनाशील, बोलने वाले जानवर, गुड़िया, उड़नेवाले वृक्ष, आदि।
- बाल सुलभ जिज्ञासा को तृप्त करना।
- वैज्ञानिक तथ्य की सही जानकारी प्रदान कर अंधविश्वास को दूर भगाना। उन्हें सद्बुद्धि, सदज्ञान प्रदान करना।
- बच्चों को संस्कारवान बनाने में मदद करना।
- बाल मनोविज्ञान को समझकर उसके अनुकूल रचना करना।

तमिल बाल साहित्य की विकास यात्रा

तमिल बाल साहित्य की परंपरा, तमिल भाषा की तरह अत्यंत पुरानी, उत्कृष्ट एवं समृद्ध है। यूँ कहें तो माँ की लोरी बच्चों के लिए रचित प्रथम बाल साहित्य कह सकते हैं। प्राचीन संघ काल से आज तक तमिल बाल साहित्य अत्यंत समृद्ध है। आधुनिक युग में स्वतंत्र विधा के रूप में इसका विकास प्रारंभ हुआ है। 20वीं सदी के मुद्रण कला का विकास और पाश्चात्य साहित्य के सकारात्मक प्रभाव की वजह से, इसी सदी में बाल साहित्य अपना चरमोत्कर्ष स्थान प्राप्त किया है। विशेषतः 20वीं सदी में सभी भारतीय भाषाओं में से, मात्र तमिल बाल साहित्य में सर्वाधिक रचनाएँ रची गई हैं।

नैतिक मूल्य की सूक्तियाँ : बाल साहित्य का मुख्य उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्य बोना अथवा जगाना है। इस दृष्टि में प्रख्यात तमिल कवयित्री आवैय्यार की 'आत्तिच्चूडि' का स्थान अप्रतिम है। इसका रचना काल 11 वीं सदी है। अदिवीरअ रामअ पांडियर कृत 'वेट्टी वेरकै', उलगनादर की 'उलगअ नीदि', आदि उल्लेखनीय हैं। उक्त कालजयी रचनाएं नैतिक सूक्तियों का संकलन हैं। इसकी भाषा शैली सरल, सरस और प्रभावोत्पादक है। यह आज भी अत्यंत लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। बीसवीं सदी के राष्ट्रकवि भारती, भरदीदासन ने 'नवीन 'आत्तिच्चूडि' की रचना की है।

छंदों से युक्त बाल कविताएँ : कहानी के बाद, बच्चों के लिए तुकबंदी कविताएँ अत्यंत प्रिय, रोचक एवं सशक्त विधा हैं। इस दृष्टि में बीसवीं सदी के राष्ट्रकवि भारती, कविमणि देसिय विनायगम पिल्लै, 'बाल कवि' अल. वल्लियप्पा, आदि प्रख्यात हैं।

तमिल बाल साहित्य की कहानियाँ : किसी भी विषय को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने में कहानी विधा की भूमिका अद्वितीय है। कहानी के द्वारा बताए गए जीवन मूल्यों का प्रभाव एक ओर बच्चों में अमिट छाप छोड़ देता है तो दूसरी ओर मानव के अंतिम सांस तक रहता है। तमिल भाषा के बाल साहित्य में कहानियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। संगम काल के पहले से ही हमारे यहाँ मौखिक कहानियों की परंपरा का बोलबाला है। तमिल बाल कहानियों का लिखित रूप तमिल साहित्य के सबसे पुराने ग्रंथ 'तोलकाप्पियम' से ही प्राप्त होता है। 'तोलकाप्पियम' के पश्चात 'नाडोडि कदैगल', 'पंचतंत्र कदैगल', 19वीं सदी में 'तेनाली रामन कदैगल', 'मारियादै रामन कदैगल', 'पौराणिक-ऐतिहासिक कहानियाँ', तिरुक्कुरल कदैगल, आदि कहानियाँ उपलब्ध हैं।

20वीं और 21वीं सदी के संप्रेषण, विस्फोट के कारण बाल साहित्य का क्षेत्र एवं विकास अत्यंत व्यापक हो गया है। तकनीकी उन्नति के कारण बाल साहित्य सुलभ्य हो गया है। अतः बाल साहित्य के विभिन्न रूप पल्लवित-पुष्पित हुए हैं। यथा बाल पत्र-पत्रिकाएँ, फिल्म, धारावाहिक, वेब सीरीज, सैटेलाइट चैनल्स, रेडियो व टेलीविजन कार्यक्रम, आदि।

तमिल बाल साहित्य की प्रमुख रचनाएँ :

- तमिल नाट्टार पाडलगल
 1. तालट्टुप् पाडल
 2. विलैयाट्टुप् पाडल
- तमिल बाल पहेलियाँ
- आवैय्यार कृत 'आत्तिच्चूडि', 'कोंड्रय वेंदन'
- भारती कृत 'पाप्पा पाट्टु
- बाल पत्रिकाएँ
 1. अंबुलिमामा
 2. गोकुलम
 3. बालअमित्रा
 4. रत्नअबाला
- तमिल चित्रकहानियाँ
 1. वाण्डुमामा चित्तिरक्कदैगल
 2. पूँतलिर (कामिक्स)
 3. तमिलवानन चित्तिरक्कदैगल
- कहानियाँ
 1. परअमार्त गुरुवुम सीडरगलुम
 2. बीरबाल कदैगल
 3. तेनाली रामन कदैगल
 4. पंचतंत्र कदैगल
 5. बौत जातगक्कदैगल
- गीत
 1. 'निला निला ओडि वा'
 2. 'कै वीसम्मा कै वीसु'
 3. 'वट्टुअ मानअ तट्टु'
 4. 'दोसै अम्मा दोसै'
 5. 'अम्मा इंगे वा वा'
- वामपंथी तमिल बाल साहित्य
- प्रमुख तमिल बाल साहित्य लेखक :
 1. नवालियूर सोमअसुंदरअ पुलअवर
 2. का. नमच्चिवायअ मुदअलियार

3. वि. कृष्णामूर्ति
4. मयिलै सिवअ मुत्तु
5. म.प.पेरियसामितूरन्
6. अल. वल्लियप्पा
7. पूवण्णन
8. मुल्लय तंगरासन
9. वाण्डुमामा
10. एम.एल. तंगप्पा

11. डा. को. मा. गोदण्डम्
12. रेवती उर्फ डॉ. ई. एस. हरिहरन
13. आयिशा इरा. नटराजन
14. किरुंगै सेतुपति
15. एस. बालभारती
16. मु. मुरुगेश
17. जी मीनाक्षी
18. सुधाराज

● चयनित प्रमुख तमिल बाल साहित्यकारों की संक्षिप्त जानकारी:

म.प.पेरियसामितूरन् (1908-1987) : आपने तमिल में सर्वप्रथम विश्वकोश और बाल विश्वकोश संग्रहित करने में अहम् भूमिका निभाई। बाल साहित्य की कविता, कहानी, उपन्यास, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी लेखन चलाई। 'ओलैक्किलि', 'तंबियिन तिरमै', 'नाट्यराणी, कड़क्किट्टि मुड़क्किट्टि', 'मंजळमुट्टै', 'निलाप्पाट्टि, आदि बालकहानियाँ, 3 कविता संग्रह, 'मायकळ्ळन्', 'सूरप्पुलि', 'कोल्लिमलैक्कुळ्ळन्', आदि अनेक बाल उपन्यास लिखे हैं।

अल. वल्लियप्पा (1922-1989) : आप आधुनिक बालसाहित्य के पितामह के नाम से जाने जाते हैं। आप बालसाहित्य के अनमोल एवं अद्भुत सहित्यकार हैं। 'आळुक्कुप्पादि' बालकहानी आप की प्रथम रचना है, जो 'शक्ति' पत्रिका में प्रकाशित हुई। आपने 2000 से भी अधिक बाल कविताओं की रचनाएँ की हैं। सरल और सहज भाषा, प्रभावोत्पादक शैली में लिखना आप की विशिष्टता है। आपके 'माम्बळमाम् माम्बळम्य' 'वट्टमानत्तट्टु, तट्टुनै लट्टु' आदि अनेक बाल कविताएँ अत्यधिक प्रख्यात हैं। आपने बालसाहित्य की किसी भी विधा को अछूता नहीं छोड़ा। आपने कुल 11 कविता संग्रह, 12 उपन्यास, 9 निबंध संग्रह, 1 नाटक, 1 शोधग्रंथ, 2 अनूदित ग्रंथ 1 संग्रहग्रंथ आदि के निर्माण किए हैं। इसमें 2 ग्रंथ केंद्र सरकार और 6 ग्रंथ तमिलनाडु राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं। 'नमदु नदिगळ्' रचना का अनुवाद 14 भाषाओं में किया गया है। आप की समग्र रचनाओं को राष्ट्रीकृत किया गया है।

आपने तमिल बालसाहित्य को नई ऊंचाई प्रदान की। आपके समय में तमिल बालसाहित्य अपने चरमोत्कर्ष में होने के कारण आप के युग को 'तमिल बालसाहित्य का स्वर्णयुग' माना जाता है। आप इण्डियन बैंक में कार्य करने के साथ-साथ 'बार्ल मर्ल', 'डमारम्', 'संगु', आदि बाल पत्रिकाओं के अतिथि संपादक रहे। 'पूञ्चोलै' बालपत्रिका के आप संपादक रहे। बैंक से सेवानिवृत्ति के पश्चात 'गोकुलं' बालपत्रिका के संपादक रहे। आपने 1950 बालसाहित्य के संपादकों को एकजुट करके 'बालसाहित्य लेखक संघ' की स्थापना की। आप 8 बालसाहित्य सम्मेलनों के सफल आयोजन किए हैं। आपने 1957-1987 तक बालदिवस के दौरान कुल 664 बालसाहित्य प्रतियों के लोकार्पण किए हैं। अपने कार्यकाल में बालपत्रिकाओं के माध्यम से आपने बच्चों के लिए प्रतियोगिताओं आयोजन करके प्रतिभावान बच्चों को पहचानकर उन्हें विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया है। वर्तमान युग के अनेक बालसाहित्यकार आप की शिष्य परंपरा के हैं।

आप 1963 में लखनऊ में आयोजित अखिल भारतीय बाल लेखक सम्मेलन में आप पदक एवं पुरस्कार सहित सम्मानित किए गए। आप 'पिळ्ळैक् कवियरसु', 'कुळ्ळंदै इलक्किय मुन्नोडि', 'मळलैक् कविच्चेम्मल' आदि विभिन्न उपाधियों से अलंकृत हैं। तमिल बालसाहित्य के आकाश में आप सदा प्रकाश देने वाले अमर सूरज हैं।

एम. एल. तंगप्पा (1934-2018) : आप पुदुचेरी के सेवानिवृत्त शिक्षक हैं। आप एक तमिल प्राध्यापक रहे। परंपरागत कविता, निबंध, बालसाहित्य, अनुवाद, आदि क्षेत्रों में आपने सफल लेखनी चलाई। आपने 50 से अधिक रचनाएँ की हैं। आप के 'सोलक्कोल्लै बोम्मै' कविता के लिए 2010 के बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। तमिल संगम कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद आपने किया है। इसके लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार आप को दुबारा प्राप्त हुआ। 'सोलक्कोल्लै बोम्मै' कविता संग्रह तमिलनाडु के ग्रामीण परिवेश की पहचान है। यह बच्चे और प्रकृति से जुड़कर रचित अत्यंत सरल तुकबंदी शब्दों से युक्त रोचक कविताओं का संगम है। इस संग्रह में कुल 15 कविताएँ हैं। ये कविताएँ क्रमशः शिशु, 5-10 साल के बच्चों के लिए, लंबी कविताएँ 12 साल के बालकों के लिए हैं। अर्थात् बच्चों के उम्र के अनुरूप कविताओं की लंबाई तय की गई है। मनोरंजन, स्पष्ट उच्चारण, गिनती, सप्ताह के दिनों के नाम, विभिन्न पशु-पक्षी व पेड़-पौधे से परिचय, तर्क क्षमता का विकास, आदि इन कविताओं का विषय है।

डा. को. मा. गोदण्डम् : आप तमिलनाडु के राजपालयम में जन्मे अप्रतिम महान साहित्यकार हैं। बच्चों के लिए 100 से भी अधिक रचनाएँ की हैं। 'आरण्यकांडम्', 'एळुसिगरम्', 'कुरिंजाम् पू', 'जन्म भूमिगळ्', आदि रचनाएँ पश्चिमी घाट के श्रमिक जीवन पर आधारित हैं। आपको 'आरण्यकांड' लघु कथा संग्रह के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मानव में भेदभाव नहीं है, सबको जीने का समान अधिकार है। यही आपकी रचनाओं के मूल उद्देश्य एवं संदेश है। वन को कथानक बनाकर, पशु-पक्षी व पेड़-पौधे की जानकारी, पहाड़ी जीवन शैली का परिचय आप के साहित्य का लक्ष्य है।

आपको 'काट्टक्कुळ्ळे इसै विळा' कहानी संग्रह के लिए 2011 के बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस संग्रह में कुल 16 कहानियाँ हैं। इन कहानियों के माध्यम से वन के बारे में अद्भुत अनसुनी जानकारी, वन रक्षा की आवश्यकता, वन्यजीव-जन्तु एवं पशु-पक्षियों की जानकारी, आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

रेवती उर्फ डॉ. ई. एस. हरिहरन : अल. वल्लियप्पा के उपदेशानुसार आप मात्र बाल साहित्य में ध्यान देने लगे। अपने नाम को रेवती बदलकर बच्चों के लिए लिखने लगे। आप 'गोकुलम्' बाल पत्रिका के संपादक के रूप में 11 साल 'बाल लेखक संघ' के मुख्य पदों में कई साल तक सेवा करते रहे। 'पून्तलिर' बालपत्रिका में 'वाण्डुमामा' के लिए सहायक संपादक के रूप में कार्यभार संभाले। केंद्र सरकार और तमिलनाडु राज्य सरकार ने आपको 35 से अधिक पुरस्कारों से नवाजा है। आप के 'कोडि काट्ट वंदवन्' बालउपन्यास अत्यंत लोकप्रिय है। इस उपन्यास का अनुवाद 9 भाषाओं में किया गया है।

आपके कहानी संग्रह 'पवळ तंद परिसु' के लिए 2013 के बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस संग्रह में कुल 5 कहानियाँ हैं। पेड़-पौधे और वन रक्षा के महत्त्व, बुराई पर अच्छाई की जीत, मैत्री भाव का महत्त्व, नदी की रक्षा, आदि विषयों पर बल दिया गया है। संग्रह के कुल 5 कहानियों में 'स्त्रीपात्र' अहम भूमिका निभाता है। स्त्रियों को चतुर, पूर्वनियोजित, निडर, सबक सिखानेवाली, प्यार व ममता के स्वरूप, आदि आदर्श, सशक्त व समर्थ रूपों में चित्रित किया गया है। सत्तारुढ़ असमर्थ राजओं द्वारा पीड़ित प्रजा का चित्रण, वन सुरक्षा की जिम्मेदारी, आदि विषयों पर अद्भुत प्रकाश डाला गया है।

आयिशा इरा. नटराजन : आपने 'नवीन विक्रमादित्तन् कदैगळ्' कहानी संग्रह के लिए 2014 का बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त किया है। कहानी संग्रह में चिकित्सा क्षेत्र की प्रगति और चमत्कार, अंधविश्वास और वास्तविक वैज्ञानिक सत्य, आदि की जानकारी हमें प्राप्त है। इस कहानी संग्रह में कुल 8 कहानियाँ हैं। 'विक्रम और बेताल' कहानी को नए सिरे में लिखने का अनुपम प्रयास लेखक ने बखूबी किया है। डाइबिटीज, रेबीज़, मलेरिया, हृदयरोग, कैंसर, एड्स आदि जानलेवा बीमारियों के कारण, इनकी रोकथाम, चिकित्सा, इन विषयों से संबंधित वैज्ञानिकों की जीवनी आदि का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

किरुंगै सेतुपति : आपको 'सिरगु मुळैत यानै' कविता संग्रह के लिए 2018 का बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप पुदुचेरी के सरकारी महाविद्यालय के प्राध्यापक हैं। आप कवि, लघु कहानीकार, नाटककार, निर्देशक, वक्ता, जैसे बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार हैं। बालसाहित्य के लिए आपका योगदान अमूल्य है। 'सिरगुमुळैत यानै' कविता संग्रह में कुल 9 भाग हैं। इनमें माँ की ममता, बालमनोविज्ञान, प्रश्नोत्तरी, मनोरंजन आदि से संबंधित कविताएँ हैं।

एस. बालभारती : आप कविता, कहानी, लघुकथा, उपन्यास, पत्रकारिता, समाज सेवा, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपना अमिट छाप छोड़ा है। अपनी रचनाओं के माध्यम से आपने बच्चों के 'आडिसम' बीमारी के प्रति जागरूकता उत्पन्न किया है। आपके 'मरप्पाच्चि सन्न रहसियम् बाल उपन्यास के लिए आप को 2020 के बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह उपन्यास तत्काल समाज में व्याप्त बालयौन उत्पीड़न, यौनशोषण, इससे बचने का तरीका गुडटच, बैडटच, आदि पर बच्चों में जागरूकता पैदा करता है। उपन्यास के बीच-बीच में बच्चों के लिए आवश्यक सामान्य ज्ञान भी प्राप्त है। यह उपन्यास वास्तव में समय की माँग है।

मु. मुरुगेश : आप बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार हैं। कविता, हाइकु, बालसाहित्य, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आप बच्चों के लिए अब तक 5 संग्रह लिखे हैं। आप की बालरचनाएँ 'गुंडु गिल्लु तविट्टु कुरुवियुम तंगरासु मामावुम', 'परक्कुम पप्पीपूवुम अट्टैक्कत्ति राजावुम', 'नल्लमतु पाट्टिक्कु नावलमरम से कदै' को विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त है।

आपके 'महल सन्न उलगिन् मुदल कदै' कहानी संग्रह 2021 के बालसाहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत है। इसमें कुल 18 कहानियाँ हैं। इसमें निशक्त जानवरों द्वारा सशक्त चतुर जानवरों पर विजय चित्रित है। वर्तमान बच्चों की रुचि के अनुरूप पुरानी कहानियों का नवीन रूप में रोचक शैली में प्रस्तुत किया है।

जी मीनाक्षी : आप पत्रकारिता के क्षेत्र से 27 सालों से जुड़ी हुई हैं। 'राणी' पत्रिका के संपादक, 'मंगैयम' पत्रिका के सह-संपादक, के रूप में कार्यरत हैं। लघु कथा, निबंध, आदि क्षेत्रों में आप ने अपना अमिट छाप छोड़ा है। आप के अनेक रचनाओं के लिए विभिन्न पुरस्कार प्राप्त है। आपके 'मल्लिकाविन् वीडु', कहानी संग्रह के लिए 2022 के बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसमें कुल 16 कहानियाँ हैं। इन कहानियों के माध्यम से बच्चों को सफल जीवन के लिए आवश्यक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है।

वास्तविक जीवन के विकट परिस्थितियों को पार कर जीवन में अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए उत्तरोत्तर विकास, समाज एवं विश्वकल्याण के लिए बालसाहित्य का संवर्द्धन समय की माँग है। बदलते मशीनी की मोबाइल व रोबोटिक संस्कृति से बचाने के लिए बच्चों को बाल साहित्य से परिचित कराना हमारा परम कर्तव्य है। अंततः हम यह कह सकते हैं कि संघम युग से वर्तमान युग तक अपनी सुदूर लंबी यात्रा के दौरान बाल साहित्य समय के अनुरूप अपना स्वरूप बदलकर बाल तथा युवापीढ़ी को अपनी ओर खींचकर अपने अस्तित्व एवं विशिष्ट स्थान बरकरार रखने में निस्संदेह सफलता हासिल की है।

लेखिका, वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एण्ड एडवांस स्टडीज पल्लव
चेन्नई, तमिलनाडु में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत